Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 11 (2023) pp: 200-205
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

परिवर्तनशील सामाजिक व्यवस्था में महिला वृद्धजनों की समस्याओं सम्बन्धी अध्ययन

अतुल कुमार प्रजापति
शोधार्थी
समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
यू.पी., भारत
Email: atulkp87@gmail.com

सार
वृद्धजनों की बढ़ती जनसंख्या के साथ वृद्धावस्था खासकर भारत में महिला वृद्धजनों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गई है। वृद्धावस्था से तात्कालिक रूप से यह संकेत होता है कि मानव शरीर के अंगों की क्षमता में कमी हो रही है जो अधिकांशतः भौतिक परिवर्तन के कारण होती है, इसका यह मतलब नहीं है कि सब कुछ समाप्त या पुराना हो गया है, बल्कि इसमें एक व्यक्ति की कार्यात्मक क्षमता में ह्रास की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो उम्र बढने के साथ होता है। इस अध्ययन का मुख्य आकर्षण समाज में सूचना क्रांति के माध्यम से हो रहे परिवर्तन के बीच महिला वृद्धजनों को आने वाली चुनौतियां है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जांचना है कि वृद्ध महिलाएं सतत परिवर्तनशील सामाजिक संरचनाओं या व्यवस्थाओं में अनुकूलन करने का प्रयास करते समय किन कठिनाइयों का सामना कर रही हैं। इस अध्ययन में वृद्ध महिलाओं में दिखाई देने वाली जटिल चुनौतियों को समझने में का प्रयत्न किया गया है।
मुख्य शब्दः *परिवर्तनशील, सामाजिक व्यवस्था, महिला, वृद्धजन, समस्या*

प्रस्तावना

वृद्धावस्था उस कालचक्र को प्रदर्शित करता है जिसमें व्यक्तियों कि शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं में धीरे–धीरे कमी होने लगती है। वृद्धजनों की बढ़ती जनसंख्या के साथ वृद्धावस्था खासकर भारत में महिला वृद्धजनों के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

यदि हम इतिहास की समीक्षा करें, तो यह खुलासा होता है कि महिलायें पुरुषों की तुलना में कम सामाजिक स्थिति में है। आज भी हमारे समाज में उन्हें भौतिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर माना जाता है जोकि उन्हें अपने शिशु अवस्था एवं किशोरावस्था में पिताओं के संरक्षण की आवश्यकता होती है, जवानी में पतियों की और वृद्धावस्था में बेटों की। विडम्बना यह है कि आधुनिक समय में भी सामाजिक परिवर्तनों ने महिला वृद्धजनों की मनो–सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक परिस्थितियों को बिगाड़ दिया है जैसा कि सामाजिक व्यवस्था या संरचना में दिखाई दे रहा है। महिला वृद्धजनों की शिक्षा एवं समुदाय के कार्य में उनकी भागीदारी अपेक्षात्मक रूप से बहुत कम है। *(अर्चना कौशिक, 2008)*

निरन्तर वृद्ध व्यक्तियों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। वृद्धावस्था से तात्पर्य उम्र के स्तर से है। कई विकसित देश वृद्धावस्था की आयु 65 वर्ष मानते हैं। भारतीय दृष्टिकोण में वृद्धावस्था को सेवानिवृत, 60 या अधिक उम्र को मानते हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार, 2005 में वृद्धजनो की संख्या 590 मिलियन थी। यह आंकड़ा 2025 तक दोगुना हो जाएगा। 2025 तक दुनिया में युवाओं से अधिक वृद्धजन हों जायेंगें और 2050 तक दो बिलियन के पार हों जायेंगें। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 104 मिलियन वृद्ध व्यक्ति हैं, जो कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत हैं। वृद्धजनों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। इसलिए महिला वृद्धजनों की बढ़ती समस्याओं और भविष्य के लिए परिवार समर्थन की पर्याप्तता के बारे में उत्तरदाता परिवार तंत्र के परिवर्तित लौकिक और सामाजिक प्रवृत्तियों के कारण चिंताजनक है। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारक परिवार संस्थान के बदलते कार्य व्यवस्था हैं। हालांकि परिवार आज भी उनकी भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं का प्रमुख जगह है। वृद्ध व्यक्तियों की स्वास्थ्य, आय और सामाजिक गतिविधियों के परिवर्तनों का सामर्थ्य उसके परिवार के सदस्यों से मिलने वाले समर्थन पर बड़े हिस्से पर निर्भर करता है। *(शिवमूर्ति एवं वडकन्नवर, 2001)* वृद्धावस्था व्यक्ति की बढ़ती आयु के प्राकृतिक परिणामों में से एक है। वे लोग जो स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अपने करियर को छोड़ने को मजबूर हो गए हैं, उन्हें अक्सर तनाव और मानसिक समस्याएं होती हैं। *(स्ट्रैंड, एम. 2000)* एक विश्लेषण में, अग्रवाल(2012) ने इस बात का सुझाव दिया कि जो बूढ़े अकेले रहते हैं, उन्हें संभावना है कि वे अपने परिवार के साथ रह रहे बूढ़ों की तुलना में अधिक दीर्घकालिक बीमारियों जैसे कि दमा एवं क्षयरोग और तत्कालिक बीमारियों जैसे कि मलेरिया और पीलिया से प्रभावित होते हैं, यहाँ तक कि कई सामाजिक–आर्थिक, जनसांख्यिकी, पर्यावरणीय और व्यावसायिक परेशानियों के प्रभावों को नियंत्रित करने के बाद भी उनकी समस्या बनी रहती है।

वृद्धावस्था का अर्थ एवं परिभाषा

वृद्धावस्था उम्र की वह अवस्था है जिसमें व्यक्तियों की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता मे निरन्तर कमी देखने को मिलता है। प्राचीन चीनी विद्वानों ने मानव जीवन को सात चरणों में विभाजित किया है। 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में पाइथागोरस ने मानव जीवन को विभिन्न ऋतुओं के समान विभाजित किया है। इन दोनों मामलों में बुढ़ापा 60 वर्ष या उसके के बाद से लगता है। पारंपरिक हिन्दू सांस्कृति के अनुसार, मानव जीवन की आयु 100 वर्ष है और इन 100 वर्षों को चार जीवन चरणों में विभाजित किया गया हैः ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और सन्यास। *(चौधरी, ए. 2012)* विश्व स्वास्थ्य संगठन वृद्धावस्था की आयु 60 वर्ष मानता है।

हर समाज द्वारा वृद्ध लोगों को अनेक आधार पर परिभाषित किया जाता है। यह कालानुक्रमिक, कार्यात्मक या युगात्मक भी हो सकता है फिर इस समूह को कुछ अधिकार, कर्तव्य और विशेषाधिकारों से जोड़ा जाता है जो समाज के युवा सदस्यों से भिन्न होते हैं। सामान्यतः समाज द्वारा पहचाने जाने वाले दो प्रकार के बुजुर्ग होते हैं। पहला वे जो समृद्धि योग्य नहीं होते हैं लेकिन अपनी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं की देखभाल कर सकते हैं और दूसरा वर्ग उन लोगों से मिलता है जो पूरी तरह से अन्यों पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार, समाज और परिवार द्वारा उन्हें सामाजिक बोझ के रूप में माना जाता है और उनके साथ पराधीनता की स्थिति आ जाती है और महिला वृद्धजनों के समक्ष अनेक प्रकार की समस्यायें आ जाती है। महिला वृद्धजन अपने आर्थिकी स्थिति को मजबूत करने के लिए स्वरोजगार या कृषि के माध्यम से या अपने पोते–पोतियों की देखभाल या घर की देखभाल और घरेलू कामों का प्रदर्शन करके सक्रिय रहती हैं जबकि युवा सदस्य घर से बाहर काम करते हैं। *(असुमन. एच., एट अल 1988)*

हूयमैन और कियाक के अनुसार, 1988 में, हम समाज के रूप में वृद्ध लोगों को कम मूल्य देने की प्रवृत्ति रखते हैं और मानते हैं कि अधिकांश बुजुर्ग मूर्ख, नौकरी के लायक नहीं, निर्मूल्य, बुद्धिमत्ता से रहित हैं, यह सत्य पर आधारित धारणा नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप, विशेषकर रोजगार और समुदाय संगठनों में नेतृत्व के क्षेत्रों में वरिष्ठ महिला नागरिकों के लिए खुले गतिविधियों में सीमित की गई हैं। जैसा कि **रॉबर्ट बटलर ने कहा है,** ''बुजुर्गों की दुखड़ा हकीकत यह नहीं है कि हर किसी को बड़ा होकर मरना है, बल्कि इस प्रक्रिया को अनावश्यक और कभी–कभी बहुत पीड़ादायक, अपमानजनक, कमजोर कर दिया गया है, और अलग किया गया है।''

वृद्धावस्था सामान्यतः एक कम ग्रहणशील क्षमता वाली मानी जाती है। वृद्धावस्था को केवल **"मौत की दिशा में एक कदम और"** देखा जाता है, लेकिन यह परंपरागत रूप से शारीरिक बीमारी, बुढ़ापे की दुर्बलता और असहायता की छवियों से जुड़ा है। हालांकि सचमुच बुजुर्ग व्यक्तियों का एक बहुत विविध समूह है जिसे आसानी से वर्गीकृत किया जा सकता है।

विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से वृद्धावस्था की परिभाषाः

- जैविक बुजुर्गावस्था मानव अंगों के भौतिक क्षय को संदर्भित करती है, जिसका कारण कोशिका दोहन की संख्या में कमी और मानव शरीर में कुछ असंख्यित कोशिकाओं की हानि होती है।
- मानसिक बुजुर्गावस्था सेंसरी और अनुभूतिक प्रक्रियाओं, मानसिक क्षमता, व्यक्तित्व, इच्छा और प्रेरणाओं में परिवर्तनों को संदर्भित करती है।
- सामाजिक बुजुर्गावस्था एक व्यक्ति की सामाजिक संरचना में बदलती भूमिकाओं और रिश्तों को संदर्भित करती है। व्यक्ति के लिए बुजुर्गावस्था का अर्थ विभिन्न सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण बहुत अच्छा या नकारात्मक होगा, इसे निर्धारित करता है।
- **कंफोर्ट (1956)** ने कहा वृद्धावस्था उम्र के साथ शरीर रचना के व्यवहार में होने वाला परिवर्तन है, जो समायोजन और जीवितता की शक्ति को कम करता है।

वृद्धावस्था के सिद्धान्त

समाज में वयस्कों की वरिष्ठ की प्रक्रिया और यह कैसे प्रक्रियाएं उन्हें वयस्क होने पर पुरुष और महिलाओं द्वारा कैसे व्याख्या की जाती हैं, इसे देखने के लिए कई ज्येष्ठता सिद्धांत विकसित किए गए हैं। यह सिफारिश की जाती है कि वृद्ध व्यक्तियों को अपने बाद के वर्षों में सामाजिक रूप से सक्रिय रहना चाहिए। डिसेंगेजमेंट सिद्धांत को कमिंग और हेनरी ने विकसित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार, वृद्ध व्यक्तियों और समाज एक दूसरे से साझेदारी में होते हैं। *(फिलिपसन, सी. एवं बार्स, जे. 2007)*

गतिविधि सिद्धांत को केवन, हैविगहर्स्ट और अल्ब्रेख्ट ने विकसित और विस्तारित किया। इस सिद्धांत का तर्क है कि ज्यादा सक्रिय वृद्ध व्यक्ति हैं, उनकी जीवन से अधिक संतोष होता है। सकारात्मक आत्मसमर्पण बनाए रखने के लिए बुढ़े व्यक्तियों को वृद्धावस्था में खो जाने वाले उन भूमिकाओं के लिए नई भूमिकाओं की आदान–प्रदान करनी चाहिए। वृद्धावस्था के आदान–प्रदान सिद्धांत के अनुसार, वृद्धजनों के पास युवाओं के साथ कम साधन होते हैं क्योंकि उनके पास कम संसाधन होते हैं और युवा के साथ जारी रखा जाना अधिक कठिनाई हो जाता है।

भूमिका सिद्धांत का तर्क है कि भूमिका का हानि ज्ञान के साथ आती है। इससे पहचान और मौजूदा स्वामित्व की हानि के साथ जुड़ सकती है।

संघर्ष सिद्धांत का तर्क है कि ज्येष्ठ व्यक्ति हारे गए वार्ता के लिए नई भूमिकाओं की आदान–प्रदान करते हैं और पर्यावरण के साथ सामायिक तरीकों को बनाए रखते हैं। *(बर्गस्ट्रॉम, एट अल 2000)*

आधुनिकीकरण सिद्धांत का तर्क है कि ज्येष्ठ व्यक्तियों की भूमिका और सामाजिक और उनके समाज के औद्योगिकीकरण के स्तर से उलटा संबंधित है। इसका यह पर्यावरणगत बदलाव वृद्ध व्यक्तियों के पर सीधा प्रभाव डालता है। आधुनिकीकरण के साथ छोटे, सामाजिक एकत्र, परंपरा–मुख्य समुदायों में कमी आती है। व्यक्तिकरण और व्यक्ति के चयन का विस्तार ज्येष्ठ व्यक्तियों की स्थिति को कमजोर करने की प्रवृत्ति होती है।

जीवन–पथ के अनुसार, बचपन से लेकर मृत्यु तक उम्र बढ़ती है। वृद्धावस्था सामाजिक, मानसिक और जीवन–वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को शामिल करती है। इसके अलावा, वृद्धावस्था अनुभवों को ऐतिहासिक कारकों द्वारा आकारित होती है। *(हेज, जे. 1972)*

आयु स्तरीकरण सिद्धांतः इस सिद्धांत के अनुसार, विभिन्न समय के दौरान पैदा हुए वयस्क समूह "आयु स्तरों" को परिभाषित करते हैं। स्तरों के बीच दो अंतर होते हैंः कालानुक्रमिक आयु और ऐतिहासिक अनुभव। यह सिद्धांत उन प्रेरित जन्म समूहों की चलन की जाँच करता है जो समय के साथ, "समूह प्रवाह" के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक समूह अद्वितीय है क्योंकि इसमें अपनी विशेषताएँ (जैसे कि आकार, लैंगिक, और सामाजिक वर्ग वितरण) हैं। प्रत्येक अनुभव किसी विशेष ऐतिहासिक घटना को होता है जो इसके सदस्यों के दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करती है।

साहित्य की समीक्षा

(रोबक, जे. 1983) जो की सामाजिक और व्यक्तिगत परिवर्तनों के साथ हो रही हैं, इन्होंने पिछले सदी के दौरान अपनी बुजुर्गावस्था की समस्याओं का सफलतापूर्वक सामना किया है और सीमित सामग्री संसाधनों के साथ, महिलाएँ बड़े सकारात्मकता से प्रतिक्रिया दिखा रही हैं। हालांकि बुजुर्ग महिलाएँ जनसंख्या का अधिकांश जगह बनाती हैं, इन उपलब्धियों को कम ध्यान मिला है। हम जनसंख्या के वृद्धावस्था का समागम करते हैं और इसके साथ ही समाज में बड़े सामाजिक परिवर्तनों का सामना करते हैं एक बढ़ते हुए कम संसाधनों के माहौल में यह आवश्यक है कि महिलाओं की बुजुर्गावस्था के सभी पहलुओं की ओर ध्यान से अध्ययन किया जाए। वे हमें उन अनुसंधानों के साथ प्रदान कर सकती हैं जो हमें भूत और भविष्य के लिए दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए आवश्यक हैं और हमें एक कम–से–कम समाज में जीवन में बचाव के लिए उपयुक्त मॉडल प्रदान कर सकती हैं। *(रोबक, जे. 1983)*

(गिब्सन, डी. 1996) पिछले दशक में बुजुर्गावस्था के एक नारीवादी जागरूकता की उत्पत्ति हुई है और विशेषकर जो कि "महिलाओं वृद्धजनों की समस्या" के रूप में देखा जाने वाला विषय की बढ़ती जागरूकता हुई है। वृद्ध महिलायें इसे स्थायी रूप से साबित किया गया है, बुजुर्ग पुरुषों के संबंध में विभिन्न तरीकों से पाया गया हैं। वे महिला वृद्धजन गरीब और बीमार हैं और उनके पास अच्छा आवास और निजी परिवहन का पहुँच कम है और उन्हें अधिक संभावना है कि वे विधवा, गंभीर विकलांगता और संस्थागतीकरण का सामना करें। "बुजुर्ग महिलाओं की समस्या" को अपने प्रारंभिक बिंदु के रूप में लेते हुए, इस लेख का तर्क है कि महिला वृद्धजनों की स्थितियों, अनुभवों, और संसाधनों को परिभाषित करने के लिए पुरुषों के रूप में एक कम निर्भर फैलोसेंट्रिक विश्लेषण के लिए आगे की मांग करता है। *(गिब्सन, डी. 1996)*

(अफजल, मोहम्मद, 1999) यह अध्ययन अक्टूबर से दिसम्बर 2013 के दौरान किया गया था जिसमें एक चयनित बुजुर्ग महिला जनसंख्या शामिल थी जो कराची के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से थी। इस अध्ययन का उद्देश्य था शोध करना कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य स्थिति, मानसिक स्थिति, जीवन शैली और सामाजिक समर्थन यायादी की जांच करें। डेटा जुटाने के लिए एक स्ट्रैटिफाइड रैंडम सैम्पलिंग विधि का उपयोग किया गया था। कराची, पाकिस्तान के शहरी क्षेत्र के जमशेद टाउन के "जट लाइन्स" और "सेंट्रल जेकब लाइन" से एक संघ की सांगठनिक प्रतिनिधित्व के लिए एक सैम्पल और दोनों से प्राचीन शहर की जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए दो संघों का चयन किया गया। प्रतिस्पर्धी और निष्पक्ष रूप से सूचना जुटाने के लिए प्रश्नपत्र का उपयोग किया गया था जिसे उर्दू भाषा में स्थानांतरित किया गया था ताकि प्रतिभागियों की सामाजिक–आर्थिक समस्याएं निर्धारित की जा सकें। इस अध्ययन के प्रतिस्पर्धी विभिन्न जीवन क्षेत्रों से थे और उन्होंने इस अध्ययन में स्वैच्छिक रूप से भाग लिया। हमारे समाज में वृद्धा महिलाओं की समस्याओं के प्रति जनता के सामाजिक व्यवहार में उचित परिवर्तनों की सिफारिश के लिए अन्य समुदाय स्थानों में भी समीक्षाएं की जानी चाहिए। *(अफजल, मोहम्मद 1999)*

(हार्बिसन, जे. 1999) ''बुजुर्ग शोषण और उपेक्षा'' को विशेषज्ञों द्वारा एक सामाजिक समस्या के रूप में बनाया गया था और यह बड़े हिस्से से ''विशेषज्ञ'' ज्ञान निर्माण और हस्तक्षेप का उत्पाद है। दूसरी ओर, महिला शोषण की विचारधारा, महिलाओं के द्वारा ही उत्पन्न हुई थी। इस लेख में कुछ वृद्ध लोग वर्तमान में कुछ अत्याचार के साथ आत्मसमर्थन की मांग कर रहे हैं, इस बदलते सामाजिक संदर्भ की जाँच की गई है। इसने "बुजुर्ग शोषण और उपेक्षा" के वर्तमान निर्माणों और उनकी आलोचना की उत्पत्ति की है, और इन्हें उत्पन्न आवश्यकताओं से जोड़ता है, और इन्हें नारीवादी करीब से जोड़ता है। फिर यह इन दृष्टिकोणों की आकर्षण और उपयोगिता को विचारता है जो अत्याचार के खिलाफ सक्रिय हैं। *(हार्बिसन, जे. 1999)*

(लॉन्ग, एस. ओ., और हैरिस, पी. बी. 2000) परिवार ने जापान में देखभाल की केंद्र स्थानीय बनाया है। पत्नियों और बहुओं को ने कमजोर, वृद्ध रिश्तेदारों के दिन–प्रतिदिन की जिम्मेदारी रखी है। हालांकि, सामाजिक परिवर्तन बुजुर्ग देखभाल के लिए विकल्प बना रहे हैं। इसके अलावा, व्यापक सामाजिक–आर्थिक और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों ने उन लोगों की संख्या में वृद्धि कर दी है जो सामान्यतरू श्महिला कामश की तरह समझा जाता है। जापान में वृद्धों के प्रति देखभाल करने वालों में अब पुरुषों का 15 प्रतिशत हिस्सा बनता है। इस लेख में, हम पुराने लिंग सामाजिकीकरण और समाजिक अपेक्षाओं पर आधारित रूप में पुरुष और महिलाएं देखभाल को कैसे अलग अनुभव करते हैं, उसे जांचते हैं। हम पाते हैं कि हालांकि देखभाल करने वालों के रोल में लिंग मायने रखता है, पुरुष, साथ ही, महिलाएं भी अपनी भूमिका

को लेकर प्रभावित हैं, और उनकी देखभाल को अच्छी देखी जाती है, साझा सांस्कृतिक धारणाओं द्वारा। उन देखभाल करने वालों की कार्यो के प्रकार, उनके अन्य परिवार सदस्यों के संबंधों, और उनकी सार्थक सेवाओं पर व्यक्तिगत और समूह चर भिन्नता लाते हैं जो लिंग अंतर होती है। हम इसे समझाते हैं कि वृद्धों के परिवार देखभाल के लिए बढ़ते सरकारी कार्यक्रमों के युग में परिवर्तनों के लिए क्या क्या बदलाव हो सकते हैं, जिन्हें मेल और महिला परिवार देखभालकर्ताओं को कम करने और उन्हें उन बूढ़े लोगों के सभी के लिए एक अधिकार बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। *(लॉन्ग, एस.ओ., और हैरिस, पी.बी. 2000)*

(रानी, पुष्पा. 2001) बुजुर्गों की समस्याएं कमजोर हैं क्योंकि उम्र को कमजोर और असमर्थ कहकर लेबल किया जाता हैय आर्थिक अवसाद जो कभी–कभी सांस्कृतिक अलगाव और मानसिक अवसाद की ओर जाता है। बुजुर्ग जनसंख्या के भीतर, बुजुर्ग महिलाएं दोहरी असुविधा का सामना करती हैं, एक उम्रदराज और दूसरा एक महिला होने की बजाय। इस प्रकार उनकी स्थिति दयनीय है और उन्हें संघटित समूह के भीतर से मर्जीयता प्राप्त होती है। इस पेपर में मामला प्रस्तुत करके यह जांचा जाता है कि वे महिलाएं जो वरिष्ठ नागरिक हैं, उनकी कठिनाईयों की खोज की जा रही हैं। इसके साथ ही यह भी जांचा जाता है कि नागरिकों, एनजीओएस और सरकार का क्या योगदान है विशेष रूप से यूएन के सिद्धांतों के संदर्भ में, स्वतंत्रता, प्रतिभाग, देखभाल, आत्म–पूर्ति और गरिमा के मुद्दों का समाधान करने में। *(रानी, पुष्पा. 2001)*

अध्ययन का उद्देश्य

- सामाजिक परिवर्तन वृद्ध महिलाओं के दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं, मूल्यांकन करना।
- वृद्ध महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक समस्याओं और जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- बुजुर्ग महिलाओं की पृष्ठभूमि और सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोध अध्ययन में लखनऊ नगर के 200 वृद्ध महिला प्रतिभागियों को शामिल किया गया है। जिनकी उम्र 60 साल या उससे अधिक है। इस अध्ययन में उन चुनौतियों को समझने का प्रयास किया गया है जो महिला वरिष्ठ नागरिकों का सामाजिक परिवर्तनों में कभी–कभी सामंजस्यिक होने का सामना करती हैं। इस शोधपत्र का पायलट परीक्षण 10 महिला वृद्धजन पर किया गया और उनकी अवलोकन के आधार पर आवश्यक समायोजन किए गए। इस पूर्व–परीक्षित शोधपत्र का उपयोग करके कुल 200 वृद्ध महिलाओं के साथ साक्षात्कार किए गए। साक्षात्कार क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा में किया गया था। महिला वृद्धजनों को पूर्णरूप से आश्वासित किया गया कि यह समस्त जानकारी व्यक्तिगत और गोपनीय रखी जाएगी। प्राप्त हुए आकड़ें को गणना और मूल्यांकन करने के लिए सांख्यिकीय उपकरण का उपयोग किया गया। शोध के परिणामों की विवरण संख्या और प्रतिशत दोनों का उपयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण

तालिका 1 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय वितरण

तालिका 1 (a)

उत्तरदाताओं की आयु	संख्या	प्रतिशत
60–69	170	85.0
70–79	20	10.0
80 से ऊपर	10	5.0
कुल	**200**	**100**

उपरोक्त तालिका मे उत्तरदाताओ की आयु के सन्दर्भ में तथ्य दर्शाए गए हैं। तालिका के अवलोंकन से ज्ञात होता है, कि सर्वाधिक 85 प्रतिशत महिला (60–69) आयु वर्ग में आती हैं, 10प्रतिशत महिला, (70–79) आयु वर्ग की है और न्यूनतम 5 प्रतिशत महिलाएं 80 वर्ष के ऊपर हैं।

तालिका 1 (b)

वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
विवाहित	125	62.5
अविवाहित	30	15.0
अकेला	3	1.5
अलग हुए	10	5.0
विधवा	32	16.0
कुल	**200**	**100**

तालिका संख्या 1(b) उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति से सम्बंधित है। तालिका से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 62.50 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं, 16 प्रतिशत विधवा हैं, 15 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं और 5 प्रतिशत उत्तरदाता अपने साथी से अलग हुए हैं।

तालिका 1 (c)

शैक्षणिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	18	9.0
प्राथमिक	71	35.5
माध्यमिक	55	27.5
हाई स्कूल	36	18.0
इण्टरमीडिएट	13	6.5
स्नातक	6	3.0
परास्नातक	1	0.5
कुल	**200**	**100**

तालिका संख्या 1(c) में उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति से सम्बंधित आँकड़े प्राप्त होते है। तालिका के अनुसार सर्वाधिक 35.50 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक पास हैं, 27.50 प्रतिशत माध्यमिक हैं, 18 प्रतिशत हाई स्कूल है, 9 प्रतिशत निरक्षर हैं, 6.5 प्रतिशत इंटरमीडिएट है, 3 प्रतिशत स्नातक है, 0.5 प्रतिशत परास्नातक ।

तालिका : 2 बुजुर्ग महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याएं

रोग	संख्या	प्रतिशत
उच्च रक्तचाप	25	12.5
मधुमेह	20	10.0
पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस	110	55.0
दमा	40	20.0
अन्य	5	2.5
कुल	**200**	**100**

तालिका संख्या 2 उत्तरदाताओं के स्वास्थ्य से सम्बंधित है। तालिका के अनुसार सर्वाधिक 55 प्रतिशत उत्तरदाता पुराने ऑस्टिओआर्थरिटिस से पीड़ित हैं, 20 प्रतिशत दमा से, 12.50 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च रक्तचाप से 10 प्रतिशत मधुमेह से 2.5 अन्य बीमारियों से पीड़ित हैं।

तालिका : 3 वृद्धावस्था के प्रति दृष्टिकोण

वृद्धावस्था के प्रति दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
वृद्धावस्था ने दैनिक जीवन को प्रभावित किया है	145	72.5
परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षित महसूस करेंगे	50	25.0
परिवार पर बोझ महसूस करना	5	2.5
कुल	**200**	**100**

तालिका संख्या 3 में उत्तरदाताओं का वृद्धावस्था के प्रति कैसा दृष्टिकोण है, ज्ञात होता है। तालिका के अनुसार सर्वाधिक 72.50 प्रतिशत उत्तरदाताओ के अनुसार वृद्धावस्था ने दैनिक जीवन को प्रभवित किया है, 25 प्रतिशत को महसूस होता है कि परिवार के सदस्य उन्हें उपेक्षित करते है, 2.5 प्रतिशत उत्तरदाता स्वंय को परिवार पर बोझ महसूस करते हैं।

तालिका 4 आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा के संबंध में बुजुर्गों की धारणाएँ

सुरक्षा के संबंध में धारणाएँ	संख्या	प्रतिशत
वित्त से वंचित	110	55.0
साथियों से वंचित	40	20.0
असुरक्षा की भावना से परेशान हैं	50	25.0
कुल	**200**	**100**

*Corresponding Author: अतुल कुमार प्रजापति

तालिका 4 में प्रस्तुत आंकड़े दिखाते हैं कि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा की अधिक नकारात्मक धारणा रखती हैं। उन लोगों में से लगभग 25 प्रतिशत ने रिपोर्ट किया कि उन्हें असुरक्षित भावनाएं होती थीं, और लगभग 55 प्रतिशत को आर्थिक स्थिरता से महरूम किया गया था। समस्याओं, बीमारियों, या पुरुष पुत्रों की अभावशीलता के कारण चिंता की भावना होने वाले कारकों में शामिल थे।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर पता चला कि अधिक संख्या में वृद्ध महिलाएं किसी कार्य में भाग नहीं ले रही थीं वे या तो किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर थीं या उनकी आवश्यकताएं पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर थीं जिसके कारण उन्हें परिवार के सदस्यों की उपेक्षा का अहसास होता है। इन संवेदनशील वृद्ध महिलाओं के देखभाल तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखने हेतु भावात्मक व्यवहार की आवश्यकता है और एक रणनीति तैयार करने की आवश्यक है। इस अनुभवी जनसंख्या के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए देखभाल और उनके आवश्यकताओं को समर्थन करने की रणनीति को बनाने में यह अध्ययन सहायक हो सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में अधिकतम 85 प्रतिशत उत्तरदाता 60–69 आयु वर्ग के हैं और केवल 5 प्रतिशत उत्तरदाता ही 80 वर्ष से ऊपर के हैं जिसमें विवाहितो की संख्या सर्वाधिक 62.50 प्रतिशत है तथा सबसे कम 1.5 प्रतिशत उत्तरदाता अकेले रहते हैं और सर्वाधिक 35.5 प्रतिशत प्राथमिक की पढ़ाई की है उसमें से मात्र 0.5 प्रतिशत उत्तरदाता ही परास्नातक की शिक्षा प्राप्त की है। अधिकतर वृद्ध महिलाएं पुराने ऑस्टिओआर्थरिटिस से परेशान हैं और बहुत ही कम अन्य रागो का सामना कर रही है।

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकतर महिलाओ को वृद्धावस्था ने उनके दैनिक जीवन को प्रभावित किया है और कम ही उत्तरदाता परिवार पर बोझ महसूस करते है लेकिन सर्वाधिक महिला वृद्धजन वित्त से वंचित है और उनमे से कम ही अपने साथियों सें अलग है।

सन्दर्भ

1. अर्चना कौशिक, (2008), बुजुर्ग महिलाओं में सुरक्षा की भावना को प्रभावित करने वाले कारक, इंडियन जर्नल ऑफ जेरोन्टोलॉजी, खंड 22, संख्या 2, पृष्ठ 175–195
2. रहमतुल्लाह. (2011), वृद्धावस्था वाले व्यक्तियों के लिए चुनौतियाँ, डेली डॉन, अक्टूबर 4, पृष्ठ, 30
3. शिवमूर्ति और वडकन्नवर, (2001) भारत में बुजुर्ग आबादी के लिए देखभाल और सहायतारू ग्रामीण उत्तर कर्नाटक, भारत में वृद्धावस्था वाले व्यक्तियों के सर्वेक्षण के परिणाम, उपलब्ध http://www-silverinnings-com/docs/Ageing Indian-pdf
4. अली और कियानी (2003), भारत में बुढ़ापा और गरीबी, भारत विकास अर्थशास्त्र संस्थान
5. स्ट्रैंड, एम. (2000), बेरोजगारी से बाहर निकलने के विभिन्न मार्ग और मानसिक कल्याण पर उनका प्रभावः आर्थिक स्थिति की भूमिका और जीवन पाठ्यक्रम की भविष्यवाणी, कार्य रोजगार सोसायटी, 14(3), पीपी. 459–479
6. फिलिप्सन, सी. और बार्स, जे. (2007), चौ. 4ः सामाजिक सिद्धांत और सामाजिक उम्र बढ़ना, समाज में बुढ़ापा (तीसरा संस्करण), सेज, पीपी. 68–84.
7. बर्गस्ट्रॉम, एम.जे., होम्स, एम.ई., और पेक्चिओनी, एल. (2000), जीवनसाथी की मृत्यु के बाद सफल उम्र बढ़ने के सिद्धांत, शोक सलाह का एक नेटवर्क पाठ विश्लेषण, स्वास्थ्य संचार, 12(4), पीपी 377–406
8. हेज, जे. (1972), समाजशास्त्र में सिद्धांत निर्माण की तकनीकें और समस्याएं, न्यूयॉकर्रू विली इंटर विज्ञान
9. चौधरी, ए. (2012), भारत में बुढ़ापा, चुनौतियाँ और अवसर डी. पाउलाराव (सं.), बुजुर्ग महिलाओं का उत्पीड़नः सामुदायिक हिंसा के मामले, मंगलम प्रकाशन नई दिल्ली
10. हुयमैन, नैन्सी, और कियक, आसुमान, एच.(1988), सामाजिक जेरोन्टोलॉजीरू एक बहुविषयक परिप्रेक्ष्य, मैसाचुसेट्सः एलिन एंड बेकन, इंक.
11. रोएबक, जे. (1983), क्रांतिकारी के रूप में दादीः बुजुर्ग महिलाएं और सामाजिक परिवर्तन के कुछ आधुनिक पैटर्न, द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजिंग एंड ह्यूमन डेवलपमेंट, 17(4), 249–266
12. गिब्सन, डी. 1996, उम्र और लिंग के आधार पर टूटा हुआ "बूढ़ी महिलाओं की समस्या" को फिर से परिभाषित किया गया, लिंग एवं समाज, 10(4), 433–448
13. अफजल, मोहम्मद (1999), पाकिस्तान में बढ़ती उम्र नई सहस्राब्दी के लिए चुनौतियाँ, संयुक्त राष्ट्र (संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष)
14. हार्बिसन, जे. (1999)। कनाडा में एक सामाजिक समस्या के रूप में "बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और उपेक्षा" का बदलता करियर नारीवादी ढांचे से सीखना? जर्नल ऑफ एल्डर एब्यूज एंड नेग्लेक्ट, 11(4), 59–80
15. लॉन्ग, एस.ओ., और हैरिस, पी.बी. (2000), लिंग और बुजुर्गों की देखभालरू सामाजिक परिवर्तन और जापान में देखभाल करने वाले की भूमिका, सामाजिक विज्ञान जापान जर्नल, 3(1), 21–36
16. रानी, पुष्पा.(2001). मोदी, ईश्वर (एड), एजिंग और मानव विकास में उम्र के लिए संस्थागत देखभाल, जयपुरः रावत प्रकाशन

*Corresponding Author: अतुल कुमार प्रजापति